

DPN 5619

कुब्जिका स्तोत्र

KUBJIKĀ STOTRA

Title: त्रैलोक्या कर्षण कवच TRAILOKYĀKARṢANA

Run. No. 6310

Cat. No. 47

Micro. No.

Subject स्तोत्र कवच Hymn

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 17 x 6.5

Folios 28

Lines (in a page) 4/5

Compl. / Incompl.

Beginning folio missing. इयमेवा च मङ्गल

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : :

Material: palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20



१५
१०
०
५
०
centimeter 5 10 15 20
रक्षा मूदु आया निसखु आ ॥ याग माया जगद्वागि लाका
लाके न मस्तुता ॥ पुष्प मा मिमहा मा य वा मस्तुता कालिका नमः ॥
जय जय महा मा य जय सर्व वि साहिनी ॥ जय काम इय का
लि जय न प्र विमर्दिनी ॥ जय वक्रादि संपू ज वा मस्तुता जय त
नमः ॥ जय जय महा यान जय संप्रदायिनी ॥ जय संक्षम

जय द वा मस्तुता जय त नमः ॥ जया संसन माख्या तं विविध
लाक माह न ॥ वा मस्तुता श्री महा काली दु कि म कि व न बु द ॥
या काली सैव वा मस्तुता वा मस्तुता सैव कालिका ॥ गस्या नो भन
मनुं एत गल क्री न य न गः ॥ एत न मान वाद वि सृ नाहन
मनी लुगाः ॥ कि म पु व दू ना कून महा न वि मरु नु वि ॥ यं जं

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

चिन्तयन् कामं चामुत्तु अयं सनात् ॥ तं तं प्राप्ता मिदव वि
 रुक्ति न जायता नृत् ॥ अग्नि नमस्काय मे नि ॥
 उपि द्वि वा म् अयं नमः ॥ ॥ विकटात्फट द द्वा अं अिकाल ल
 नृहीषती ॥ अग्नि विष्ठा न व द ना ज्ञान कान य नै ऊ ग त ॥ द ह
 क्षी मि व दः प्र कां ज द हा स म् द ऊ यो ॥ अ स्थि म् लु म हा मा ला

विशाल ४

म् लुटा ट क्लीषती ॥ नील म धां ध न ग्ना मां म हा क क्क न वि ग्र हां ॥
 म हा व द्म हा व हां स्व लु ल क्क व म लि तां ॥ लि ज न्नु य व पा दाः
 द्वा म् क्क क्ली दि ग्म म् नां ॥ म हा यु मा स ना नृ हां म हा र व्ज म् हा
 क्क नां ॥ म हा नृ ल म् हा म् लु पा न या द क्क नां म् ज ॥ ज ग नां रु न्दु
 म् ज सा उ व न य यो ॥ या य य न्नी म हा यो नां म हा र्ग नां ग र्ग नां म् हा ॥

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

२ वन्कितातावितालिवा २

असंख्यानेः सूर्येर्विषयं असुरैश्च ककिन्नयेः ॥ मनिमिद्वगर्भः
 रत्नेषु बुद्ध्यादिमन्त्रिः सदा ॥ संयुजितामुनिरत्नेष्वनमितामादि
 तावेव सिद्धिं पुमदं न्वी ॥ अरीष्टस्ववदादं विरुक्ता कामद
 द्यामदा ॥ मधुमांससदाहानां महायुद्धं जययुद्धं ॥ अरुणप्रमद
 नकुशां लकिरिर्नैवकाटिरिः ॥ समुद्रमानांदवलीमद

रेववयुजिता ॥ वक्त्रादसुवतालरुणयुग्मगदादिरिः ॥ मा
 रकादवदवलीमावृताकिनीगर्भः ॥ अग्निवतालसन्नु
 लमानां गलकाटिरिः ॥ समावृतापरांतिषां महाकाधरयक
 नां ॥ यश्च बुद्धसुगमरधांलाकांलाकनमस्तुता ॥ वाग्मादिनीमहा
 कीर्तिप्रसिद्धिप्रदायनी ॥ कलकालीकमायीश्च अनिमादि

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

महाकुवा ॥ उवाकू स म संकागे वर्जिता सून नायिका ॥ याम्पु
 सिद्धि चाम्पु पुलसा मिसदा क हं ॥ निष्कान मुतिः ॥
 उवाकू डि ये नमः ॥ ल्या मा न का विन प्राम न रु व न मिता म
 ह मा त इ ग मी निष्वा स्त्री चारु न प्र दृ थ ग न ऊ द्य ता म र व
 ना न ल र ली ला ॥ द वा र इ व मु र गी ला व न व न कू स म व व न

क म र गी ला म मी कू डि का र वा वि ग न रु स ग रं कू न दि वी य
 मा यं ॥ ॥ ल व द वी म द्य का रा न रु गु ल नि ल या क र्च मा यी न रु
 या मि द्य र सा द ले शु क स य नि वृ ता गी क व र धे ल्य नो डी ॥ ल
 म्वा स्त्री चारु मा य गु ज न र य कू द रु ना स पु द्द स्त्री सा व द वी क

ॐ कारवा विमुवनन मिताया गुमां मकुयका ॥ निः
कान्नाधनवकुग उद्वलय निरास दिवाद्या गयनीव क
ध्यावरुयनीयन निमज्जरा मादुभि रिषुन शनी ॥ नव
आराकैयकं सननिचसगगं ववरा न उमीव सादनीक

ॐ कारवा पुलासगसगगं नीववरधे मुबोदी ॥ सांयो
सुझाकै कावायव मयवयनादवी गुद्वारवा रवावी रवेकु
लधवाजीः कुमलप निवृताथा गिरिच निवृत्तेः ॥ गन्धर्व
ः सिद्ध संधे मुहगलमनू उचचिना सर्वका लसादवीः

श्रीकृष्णिकाख्याविदुननमितायादुमांभकयका ॥ ॥ सिं
इनाझाहिनादीप्रियवयनगनाशानयनीतमस्तं नादस्या
नामनस्यादिविभक्तुपरपुत्रेयजनप्रविष्टा ॥ आवकाकृष्ण
नृपाकलमकूमयाज्ञावयनीपिलाकान् किन्नाकिउरकह

लं१

साधुमदिनसमूदाश्रीकृष्णमांयनाह ॥ ॥ यीजनानामाअपीर०
रंगवसिसकलाब्दविन्दुग्रसनीयद्यस्यायुह्वनकी॥
क्रमपदसकलेनकृष्णायहवैः ॥ संसायसअरवेनीजस्रनस्रन
मनविन्दुमूद्रागल्लकंकारयनीननिवकिनरलेः श्रीकृष्णली

धैषारवा

वि१

नमामि ॥ रुं स रुं स गिरुं स कलिमलदहननिष्कलियापगखं
 श्रीजयदासनस्थं दुधिलधिषदकोलिनीनिःप्रपंच ॥ वप्रयक्षय
 वागविनसिविमलगजविम्वान्नवस्थविन्दस्थनादसंस्थमकलग
 नृगतां श्रीकृज्ज्वां नमामि ॥ जूध्वरगभागमानागगद्यपुनववसं

न३
 स्थितावन्त्यस्युकापारङ्गबाडन्मननियतिदिनं वृक्षनन्वा
 कनल ॥ स्वस्थां गकिचक्रमसिक्रमयदं यागयन्नीनवीनं जं वसा
 दहिनिस्तरुवरुयहृनरलश्रीकृज्ज्वांसिद्धिमार्ग ॥ ॥ त्वं मानासिद्धव
 कविदलदलकोलिकश्रीकृतानां गप्रस्थानात्तनस्थासमनससम
 दल१

यशवयकी खदरु ॥ मातृश्रीशुभवीरपनमयनमरुनामूल्यदवी
 कलाकृतानां कारयकी नवदलानि निरुधी कृताम्बानामासि ॥
 नादाननादयकी रगमयनयनविन्दुमरुनामूल्यदवी ॥
 निसंस्थाहसखरुलैकं लामरुनामूल्यदवी ॥ श्रीं श्रीं श्रीं काववी जे

प्रिगुतगुरुगयाअगालं पितृनत्वानी कर्मनिखंयगुरुयरुनाम
 श्रीकृजामांयना ॥ ॥ श्रीं श्रीं श्रीं काववी नवकसुमयननद्वी
 यागुरुमनें श्रीं जलामनस्थगमयननद्वी ॥
 सर्वायस्थस्थितासि रगवगि जमलकदकीया नवत्वानंदवी नामा

इदं वी विद्युत्सि सप्तमं विद्युत्सि लंकु अ सि ॥ कामाख्या विंदुद वि
 प्रियुवत जीनी त्वं वद र्जनयं स श्री मा त्वं जा दि वक्र यवन सप्तमं व
 दिता रूपा विता क ॥ वागुर्व र्ज्य मा ल कट विकट कट कट कट कट
 कामा वद्व श्री को ल नू य ग व न व ल म हं श्री कू अ मा क म स्त ॥ ३०

न ३

यम द्वादश सूत्राः को लिका रूपा विनिर्गताः ॥ प्रिकालं पश्य यस्तु
 न स्यात्सं प्रवर्तन ॥ एकान्त विजन न म्भ ३ शानं वा गुह्यं न य ॥
 नदी सप्तमती न वाणी श्री न वा वदुः प्र २० ॥ एकलि र्ज थ वा द वा गि
 योगु र्म नान म ॥ कामा गु प ० न या वै एक विल सप्तमा हि तः ॥ ३१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ न किं या किं विदुः क
लोकमसंप्रयत्नीलया ॥ सिद्धयन्तां प्रसंदं सुखादाय नमः
स्वामी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मिस्रम गंलील आनक रावेः ॥ सा कानन्द सोखु अतिनव गनंया
गिनां धानमा प्राप्ता म श्री ॥ ॥ या सा अंका व ग क य व क व स हि ता
वा अरम धा ग क र्णी म ऊ ला ध ना ख्य क टि न नि व य द दि र ध वे
व कार ॥ ताम श्री पूर्णु श्री ॥ म द न क ल यू गा सं स्थि ता का म

ग्रथः माम श्री ॥ ॥ श्री म ऊ ला म न दार्द्र विक सि त वि म ल श्री म
धो का व ग क ताम गं रा नि ष र्णु व मि स ख वि व स र्णु व द र ण पु य ना ॥
नि स्थान न्ता रे ला घा न पु र सि त म व द ना या स्थि ता मृ द्धि रु ताः सा
म श्री ॥ ॥ ॐ कू ल नी कि या र्था वि वि ध ग नि गू ता गु द ना दि

प्रकाशः सिद्धासिद्धे प्रकृतिः यत्र केवमहिता वावृता यदुपकार
 : [परिचय] गिनीरि उवेलक सरुया संस्थिता वीनवकुसामग्री
 [उवावा दवतस्यारु वगिनि यामिता युक्ति द्यादि चतुर्थः प्रत्य
 कं वायवाकं यलुगनय नैक मयनं यानिमदा ॥ रमित्या गंक वि
 स्वे स्वतः गगनयति यिषुः सिद्धिः प्रसिद्धिः सामग्री ॥ नकम

म२

यावद्विषयस्य हि मूलनिधवलात्तान्त्रिकयष्टिकवा संरुयापी
 गवत्सु स्फुटिक निरायाय नारण प्रयत्नो धूम्रा उवा नारये नि
 जगुत्सु स्थिता मावाला कृष्णवत्सु सामग्री ॥ वाष्प्री बोदी
 प्रकाश्या विदलरु यदुवाये सुवी स प्रसिद्धा सिद्धा दूती वना

15

01

हीसत्रविषमधनातीप्रचलुत्रलकी ॥ उकासानेकरूपाशुसि
 तमहाप्रयत्नीयेप्रणवासांमयी ॥ इतिध्या - - वष्टानेम
 स्तानरुमिसंरुः ॥ ॐ श्रीरुद्रिकायेनमः ॥ समरावरुनगुने
 कल्पवृक्षवनाके ॥ नानावत्तनाजमानदिवासिहानस्थिता

5

0

centimeter 5

10

15

20

मुनंदवगलेःसर्वेष्टमरुषिप्रमखेःप्रभुं ॥ दवदवमहादवंगन्ध
 वेष्टपत्नारितं ॥ प्रमरुगिनिजादविसर्वताकरिनेषिनी ॥ प्रीया
 वयवाच ॥ प्रालनाथजगन्नाथसंगवासिपहानमम ॥ कथितारुद्रि
 कामरुःप्रर्विवेष्टप्रभुत्वं ॥ पश्चिमाश्वारिस्तानरुवताकलाः

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20

४६
विक्रतु कुरुकुलकुलिं जनसमूहसंघके औदरसं
विक्रतु कुरुकुलकुलिं जनसमूहसंघके औदरसं
४७ कुरुकुलकुलिं जनसमूहसंघके औदरसं
कुरुकुलकुलिं जनसमूहसंघके औदरसं

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20

कोमा श्रीध्यानं ॥ श्रीकोविजपासुनरूषि गणसंयन्त्रिगहिमंरुधा
 रिबिषयागुपनगविषसावृष्टितन्द्रेगम ॥ यामजं नृदिपानम
 छितक नालकिंश्चजंविशगीवोनिवातविदारलेकक नलामा
 यप्रथानंममा ॥

निष्ठा ॥ कवचं कृत्वा कदम्बाः ॥ दान्ती रत्नाणि मिश्रत ॥ कथावन्मां पु
 गित्यालपुक्रानये विराधना ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ गृह्यदविपुत्र
 अनितवस्वरुनसन्दनि ॥ पुलावा अष्टकूटस्य नृषिर्मथानरे
 वः ॥ शुभान्दुष्टद्वयमाचकृत्किपावैवत्तु ॥ वीजं यमश्चकूट
 स्माकं किनत्येवमानन ॥ रणप्रसुकीलकं रं विनिवारणविरु

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

तय ॥ यः कवी महाविद्यानि यथा पुः पुः जयं ॥ यं वा कवी विरलं
 लस्य कवी हृदं प्रियं ॥ अहं कवी सुतो या पुन वा कवी यः पुः
 कं ॥ दं ॥ कवी महाविद्या वाग्वा शान्ती वीरकं ॥ का माया द्वा दं
 या पुः कटिलिङ्ग मदा जया ॥ या र्वं पुं च दली या पुः वा उर्ध्वं सुकलं
 वपुः ॥ क्रीडं हृदं विजया या पुः धनं रं न दानि ता ॥ वाग् वं पुः लव

कूर्चं रुक्मा नी जय नदं ॥ रुक्मिणी ललिता या पुः मु यं पुः पुं वनं यः पुः
 पूर्वस्या न्दिनि विरग्वी न द्वा या वता निवी ॥ दक्षिणं सारं नवी साधने
 धान्य समृद्धि दा ॥ उरु न स्यां महा माया पश्चिमा यां निगा प्रियं ॥ यः पुः जा व
 नरगो या पुः न था पुः उजिका नरकान् ॥ स्वर्ग मादं मरुत्तानी विगा सा दी वना
 निग ॥ ये सा कदि नी या पुः दी य या गे विना निनी ॥ गरलः वा पुः निर्विघ्नं याः

मा

मंगुपर ० लक्ष्मी ॥ गगः सिद्धागिमकुमं नान्यथा कल्पकाटि रिः ॥ क
 वृत्त्यसाधयदि योनिनस्थो जयदं रवे ॥ वाहूस्वमाह नं वाहूद्वि
 स्वेष्टा विदुत्पिथ ॥ कवस्थं पृथुदं नृणां निर्यास्व सर्वकापदं ॥ सर्वका
 पृथुदं सर्वसर्वन कानसंगयः ॥ रगपनी रंगपनी रं रंगिनि रं तदापि
 य ॥ दद्योक्त कायनिष्ठा यवद्विह प्रदाय च ॥ जयपूजापरायेव ना

यथासिद्धिद्वयिथ ॥ जरुकरुखापिथयुत्थादत्वा मृत्पुमवाग्रयाग ॥ न
 जाववधे १० त्रिंशंकववंसंयवंदिग ॥ दिवसमित्यकम्मासिकवलेष्टी
 नयंतव ॥ ॐ गिउसाआमत्तं निपादगिसंवादष्टीकडिकायाः पुतो
 कर्षलकववंसंप्रु ॥ ॥ ॐ श्रीकडिकाये नमः ॥ ॥ श्रीदयवाच ॥ दवेद
 वमहादवगनाकृष्टगणव ॥ त्वत्प्रसादात्सदवप्रगामकाह्यनक

य२

मः ॥ किं बुद्ध्यावश्यां ज्ञेयं नामकवचं गुरुं ॥ यदक्रान्तमनुमयः ॥ हल
दानरवमिदि ॥ तस्मात्कथयद्वेनं अहं तव वल्लभा ॥ श्रीमहेश्वर
उवाच ॥ ब्रह्मस्य निबद्धस्य न कस्मैचित्पुण्यकामिना ॥ अतीवमत्ति
यासीति त्वर्थं कथं न वास्ति मे ॥ मनुसिद्धि कनकं तु कायसिद्धि कन
कथा ॥ कृत्वा रिशायदायघ्नमहात्मिकं नमनं ॥ विविधककलपनं

महाविरवदायकं ॥ अस्मत्प्रादीरणाहं रेवना नानं नयः ॥ बुद्ध
विक्रमसुन्दरायाः स्वां स्वां सिद्धिं प्रयदिन ॥ कथयामि तावकानां
त्रातृन्मन्त्रवरी ॥ ॐ अस्य सर्वविद्यानां श्रीकृष्णिकादनीव
ज्ञेयं उच्यते ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ विष्णुस्तु तन्मायैव कुरुते ॥ इति
श्रीकृष्णिकादवतारसंस्कृतं श्रीकृष्णिकादवतारसंस्कृतं श्रीकृष्णिकादवतारसंस्कृतं

का २

सकलमनुसिद्धिपूर्वकधर्मार्थकामभाकार्थविनिर्माणः ॥ श्रीग
यात्रुवृक्षनेत्रुमीलनीमललाटकं ॥ सम्वत् १८५३ ॥ यात्रुमनत्रमलाल
नासिका ॥ नन्द्यामव्यादुयगलंगलुप्रादुजलाधियः ॥ दंगयक्रिय
गंप्रादुसदाभूदुगदुगः ॥ नसतामसदायादुयवनः यत्रमसुयम
ज्योतिषवृक्षनकदिन्दुविन्दुविरुषितः ॥ वदनं सकलयात्रुवृक्ष

नंदद्रुपधृक् ॥ ननिक ॥ सुसदायातुं गीतानः कलुदलकं ॥ वलुन
 : यातुमनित्यं सर्वदा दद्यात् ॥ ययश्चमः सदायातुस्तद्वदंतु
 मासकं ॥ यातुपातुसदायुधीयुखं यानीसदावदु ॥ कलनः यातु
 हस्तोपमवनमुकवाहलीः ॥ यधीकामकलायातुनारिदर्शनार्थाद
 नं ॥ अनंदद्रुपितीदधीनवात्यासर्वदावदु ॥ लिङ्गमृषलजगमध्यातु

15

0

मयककुटिका ॥ कटिदंतेसदापाउसिद्धि कुडी सदा मम ॥ उत्रमसर्व
 दावककुटिका मया ककुटिका ॥ जाननीसुनतं नका नाक ककुटि सदा
 मम ॥ जंघायुगंगागकुडी अयककुडी तुगुल्लु कं ॥ साहुली वनलोया
 उत्तर्जदावककुटिका ॥ यथा नम ककुटि पाउ दाना नमो याउ ककुटिका ॥
 मनकपुंगुहयामंसा सदायादिकं वरं ॥ ककुटिका मसदावक

5

सर्वसकृष्टतात्रिणी ॥ अकात्यादपय्यंतं मूलदवी सदावतु ॥
 ल्यगलकवचं प्राकं वदयं ज ननामकं ॥ नां ब्रुकल्यद्रूप नृनां सावका
 मां धुतां सनां ॥ गुत्रमस्य च विवेरु क्ता नत्नादिरिः प्रिय ॥ मूलदवी
 प्रप्रकाथकवचं प्रये ॥ हनः ॥ त्वदह विन्यस्त यमु तस्य संयक कुरु
 गृह ॥ जितयात्रिः नताय नृपवा नृगुणवान् सदा ॥ धननृनो द

0

centimeter 5

10

15

20

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

संपूर्णविद्यावानरिजायत ॥ नाग्निर्देहति नत्कायं नापः क्व दयेति
 च ॥ नरत्मापयति न वायुः क्व द्याहं न हिनस्ति च ॥ नित्यं यद्विद्युत्
 क्ता क्व वदंति वराधिपतं ॥ स्वयमेव महादेवो मे हा क्व कीदृशं वदंति ॥ व
 दनाप्रविमकुलं यद्यदि क्वंति साधकः ॥ न त्सर्वं लहन् नूनं क्व वस्य
 प्रसादतः ॥ प्रिसन्धाय नाद विस्वार्त्तान् कामान् पालयन् ॥ न ह

यं निष्ठा २

लघुम्वकं लघुम्वकं पनस्यः स्रजं धवि ॥ नास्ति कस्यानिन्दकस्या
 नेवदयं स्रजं धवि ॥ नदं यं पनसि ध्यायदवैव ॥ जरकस्यापि
 प्रस्रज्या दत्वा पृथग्पना प्रया ॥ तस्मान्न्यविद्यया न वदंति ध्यानि
 विवर्गमययः ॥ सर्वं तीर्थं सर्वं यद्गुरुलं पातालं रुद्रं ॥ इदं क्व
 वमस्तत्वायः क्व (आ) रुद्रं नवनः ॥ न तल्लक्ष्यं क्व विनस्य विद्या

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

नसिद्धादि॥सहस्रमुद्रागमाग्रागिस्तारविशामृतमहसि॥गुनयू
 जंविष्णवादीमूलदवीशुभं॥गदायपित्वाकंवचंसर्वसिद्धि
 मूयालरुत॥॥ॐगिमलरुतगिवदवीसंवादेष्ट्रीकुडिकादे
 व्यावज्ञयंजननामकवचंसंयुक्त॥॥ॐकुडिकायेनमः॥
 नमस्तुदवदवदवलीमस्तुमूर्तिस्तुमन्त्रि॥रक्षाकदादगकोदिवीपु

ननदिव्यासने॥॥लीलीधनानाव॥नेकानासनमात्रावज्ञयधा
 यविता॥सिद्धिमंददनेनिलंष्ट्रीकुडिकांतमायूरं॥॥ज्ञानलक्षिण
 हापायादिव्यज्ञानप्रकालि॥जन्मज्ञानगतादवीष्ट्री॥॥पीठंअरुपुं
 मधुस्थदिव्यालक्षिप्रकालनः॥पदप्रकाशसमाध्यानी॥मैनाखंड
 खंडरुहितादवीहिमवक्तृमन्त्रि॥सिद्धांतवस्तुनिलंष्ट्रीनावा
 नी३

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

नकुमसमायागारयाक्रादवसिद्धिना॥पनिहाराकनाथावाप्री॥
 दानादागमशयावायागानावलंविनी॥नित्ययुक्तास्वयकस्था
 श्री॥वन्द्यदीपमिलालुकापूजिताचमयायुना॥सयुक्तमिनि
 :क्राकाश्री॥जन्मदुर्काणमथस्यानरुतादित्यसमयलं॥दिवा
 कास्वस्वयावश्री॥नूदगकिं सदायुष्यपीपनाकीरुनाद

दि॥त्रिद्विपाददमदवीश्री॥दवनेयुक्तनित्यवक्तव्ययपना
 यलेः॥सिद्धियागंरीखागाश्री॥सिद्धिनिग्रधरैःसर्वेशागिनी
 गलवृन्दकः॥वाद्यनृत्यनतादवीश्री॥रात्रिगारुवकीउग्रज
 मागयदममिनी॥मिष्टमायप्ररुदवीश्रीकंकिशानेमास्यहं॥
 खगदादगस्वंकुजिकायनमभुनी॥नृद्विसिद्धिस्वदेवी

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

प्रसादात्वंकृतं धीः ॥ गिदायनसूत्रमुनिः संवर्तुः ॥
 श्रीकृष्णार्थेनमः ॥ दर्शनदहनार्थं स्पर्शनं तत्पुष्पं ध्यानं ॥
 वन्दनादर्थं ध्यानं कृष्णकानामयलिकां ॥ संघाकोलं यथावत्
 तस्य स्मरणं सदा सदा ॥ हृदि पार्थयवृत्तं कृदिका ॥ सादरी

ध्यानपूजकं ध्यानकीर्तनमाननः ॥ नवकं ध्यानं तत्रैव कृदि
 का ॥ पुष्पमयं निवसादवीं यत्र पुनाय विस्थितां ॥ वानावृ
 द्धवावृथा कृदिका ॥ प्रातःकालं उसावासा भूवा मध्याह्नं
 वच ॥ वृद्धयूपायनाक्षरं कृदिका ॥ यजनाजल्पदधीनि

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

प्रा. २

लाघुगिवाकिणी ॥ मलुमालागलरुमाहा अहिकूलविधा
 निधी ॥ दादनीचहुजादवीदकिधकासधनिधी ॥ विनूलरुमं
 चहुद्धखदाङ्गवागधी ॥ अरुयमकसुप्रअमलुदर्थलधनिधी ॥
 एकलुलामृगंकरंनलाचयूषामालका ॥ कामदककनानगाधययुत्

पनमगुनी ॥ जननंयादयासुल्याः कर्कोदामखलातथा ॥ तक
 कनायकीतंवगलेहानकुवासेकी ॥ कलिकंकलुयाः प्राकंकुम्भ
 मगुलमुत्तिन ॥ अमलीसंस्थितयद्यमहायद्यंगरथेवच ॥ वारुदंउ
 यत्तवंयत्तहप्ररुमिमत्तिन ॥ वनमालागरोदव्याधावत्यादाव

लंविनी ॥ दादिंश्री श्रीधात्वा सर्वकामार्थनयिनी ॥ इति मुद्रा
रुद्रिका यात्रा ॥ ॥